वह दिन जब मैंने शहर के लिए घर छोड़ा

Lesley Koyi, Ursula Nafula

Brian Wambi

Nandani

Hindi

Level 3

(imageless edition)

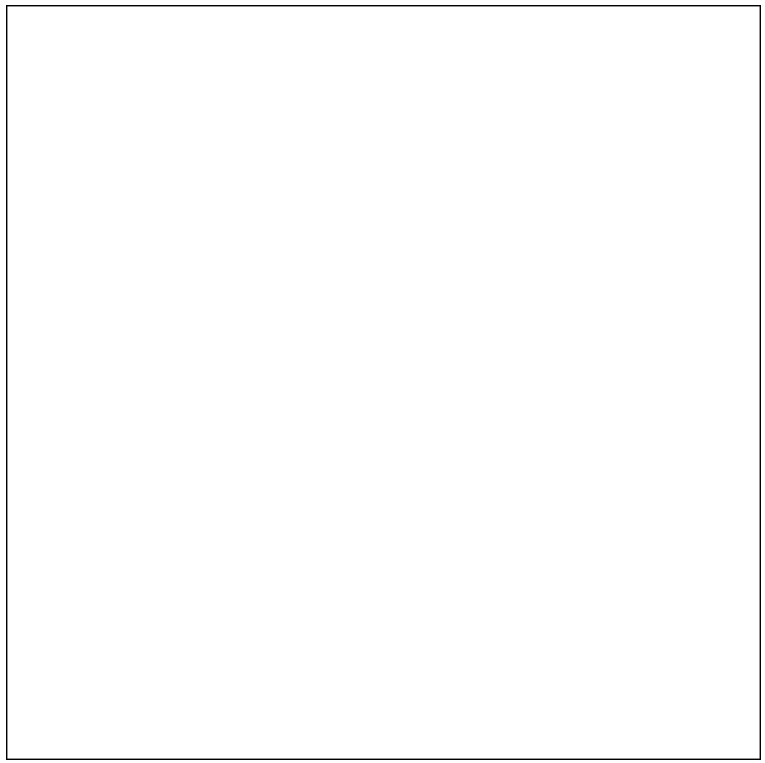

मेरे गाँव का छोटा सा बस स्टैंड लोगों और भीड़-भाड़ वाली बसों से भरा रहता था। उस जगह पर बस में चढ़ा ने को बहुत सारी चीज़ें थीं। कंडक्टर भी बस के गंतव्य स्थल का नाम पुकारते हुए ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ लगा रहे थे।

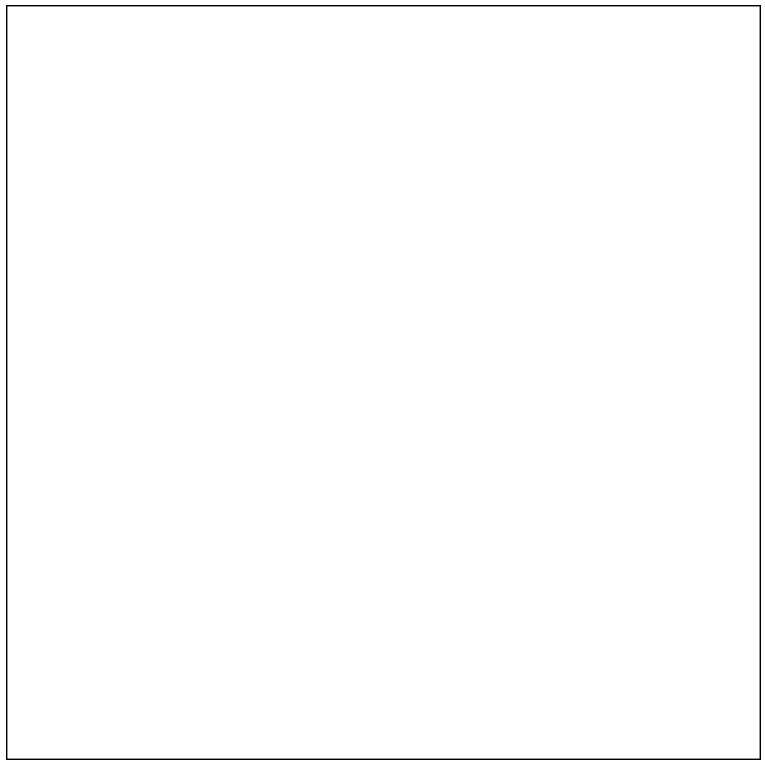

“शहर! शहर! पश्चिम जा रहे हैं!” मैंने कंडक्टर को चिल्लाते सुना। ये वही बस थी जो मुझे पकड़ना थी।

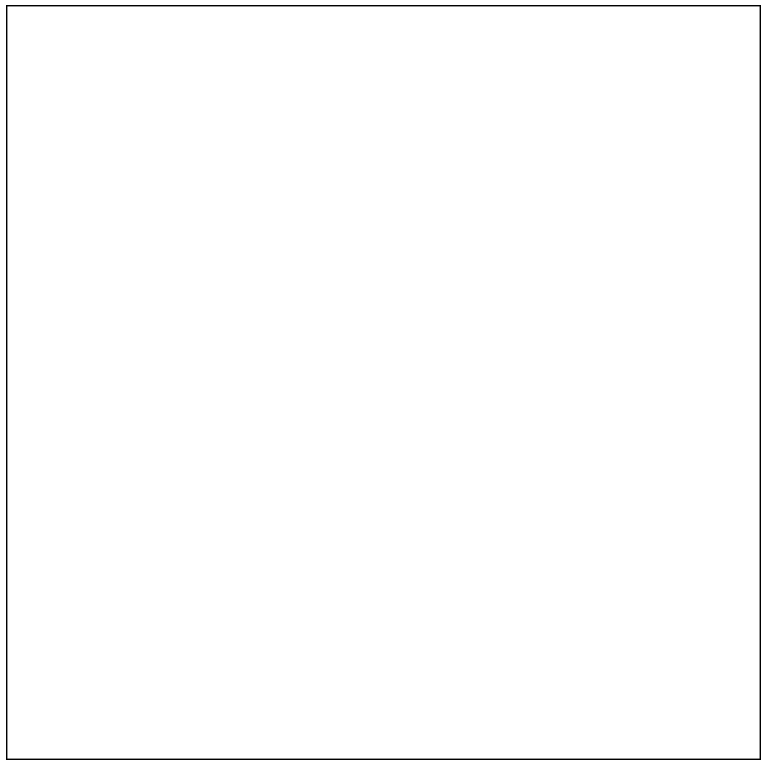

शहर जाने वाली बस लगभग भर चुकी थी, लेकिन और लोग इसमें जाने के लिए धक्के दे रहे थे। कुछ लोगों ने अपना सामान बस के अंदर रखा था। और लोगों ने उसे अंदर बने तख़्तों पर रखा था।

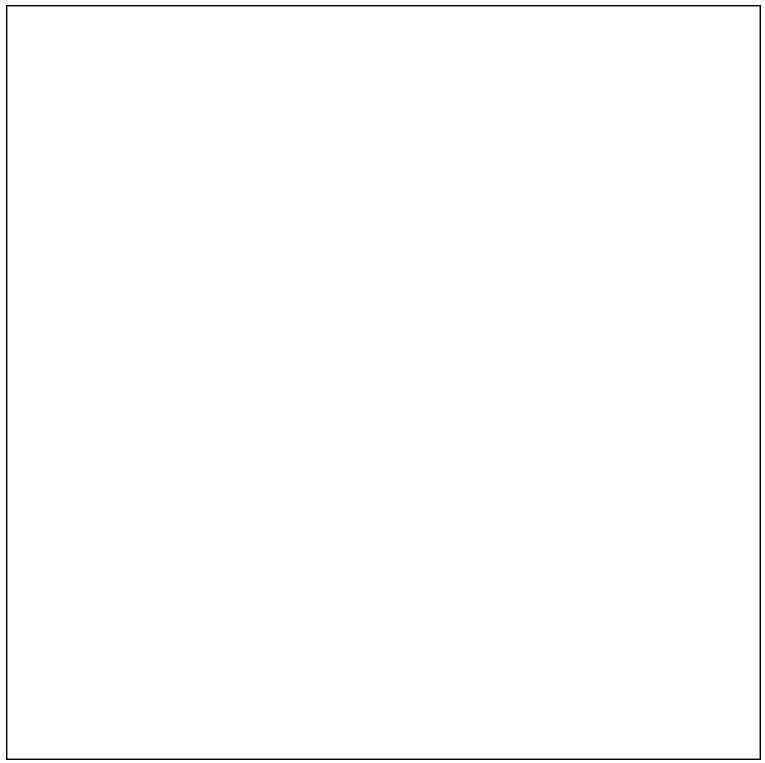

नये यात्री अपना टिकिट हाथों में दबाये, भीड़ वाली बस में बैठने के लिए जगह ढूँढ़ रहे थे। छोटे बच्चों के साथ महिलाएँ भी इस लंबी यात्रा के लिए अपनी व्यवस्था सुविधाजनक बना रही थीं और अपने बच्चों को आराम से बैठा रही थीं।

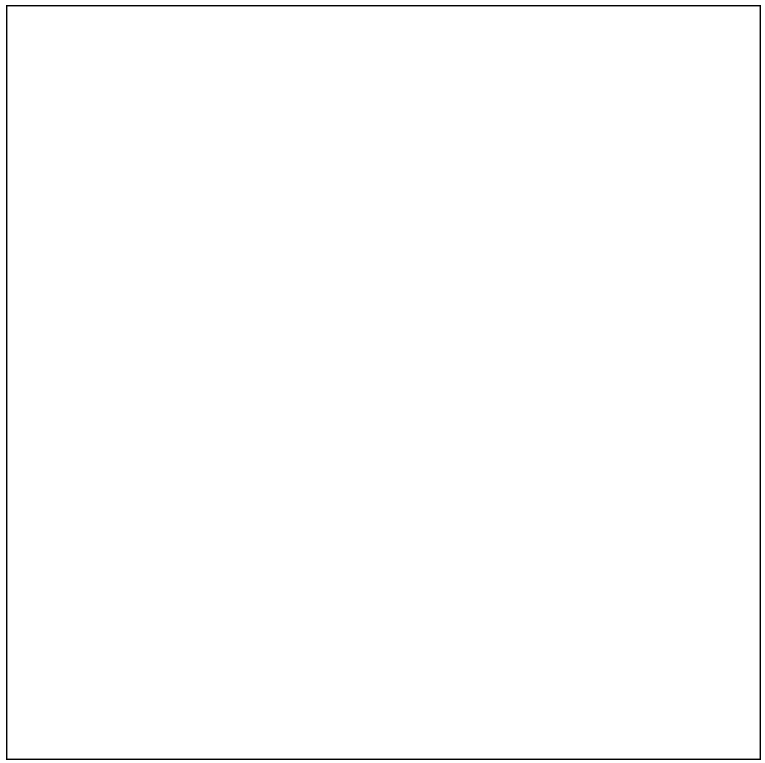

मैं एक खिड़की के बगल में घुस गया। मेरे बगल में बैठे हुए आदमी ने हरे रंग का प्लास्टिक का बैग ज़ोर से पकड़ रखा था। उसने पुरानी चप्पल, घिसा हुआ कोट पहना था और वह घबराया हुआ लग रहा था।

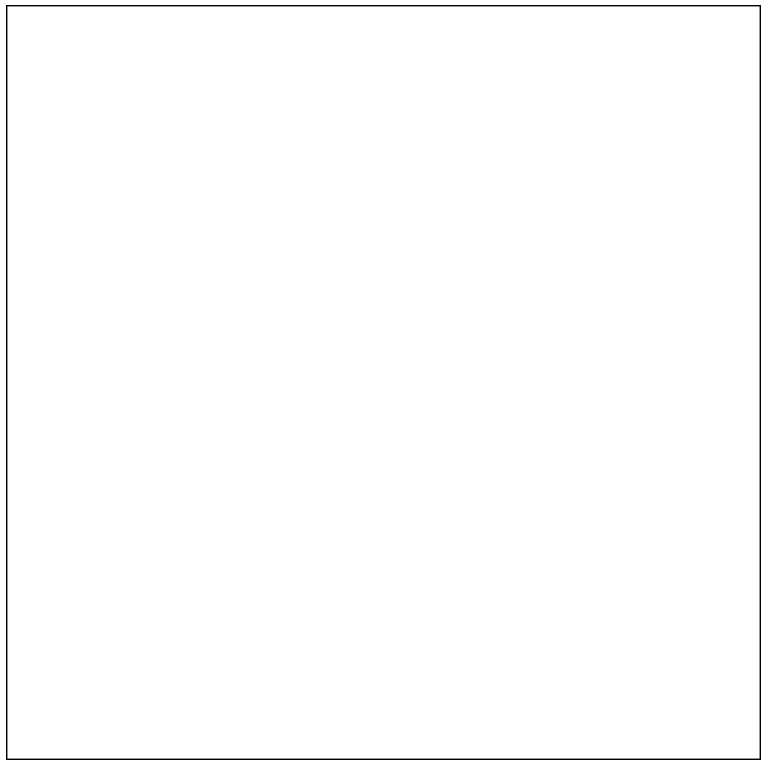

बस से बाहर देखते हुए मैंने ये महसूस किया कि मैं अपने गाँव को छोड़कर जा रहा हूँ, उस जगह को जहाँ मैं बड़ा हुआ हूँ। मैं एक बड़े शहर में जा रहा था।

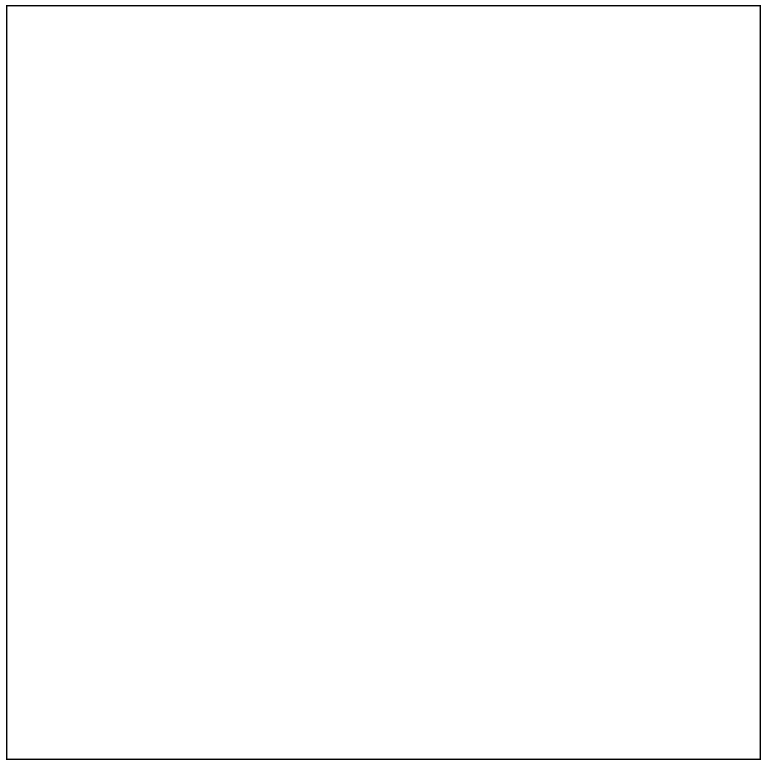

लोगों के बस में चढ़ने का क्रम ख़त्म हुआ और सभी यात्री बैठ गए। फेरीवाले अभी भी यात्रियों को अपना सामान बेचने के लिए बस में घुस रहे थे। वे अपनी उन सभी चीज़ों का नाम बोल रहे थे जो उन्हें बेचनी थीं। उनके वे शब्द मुझे मज़ेदार लग रहे थे।

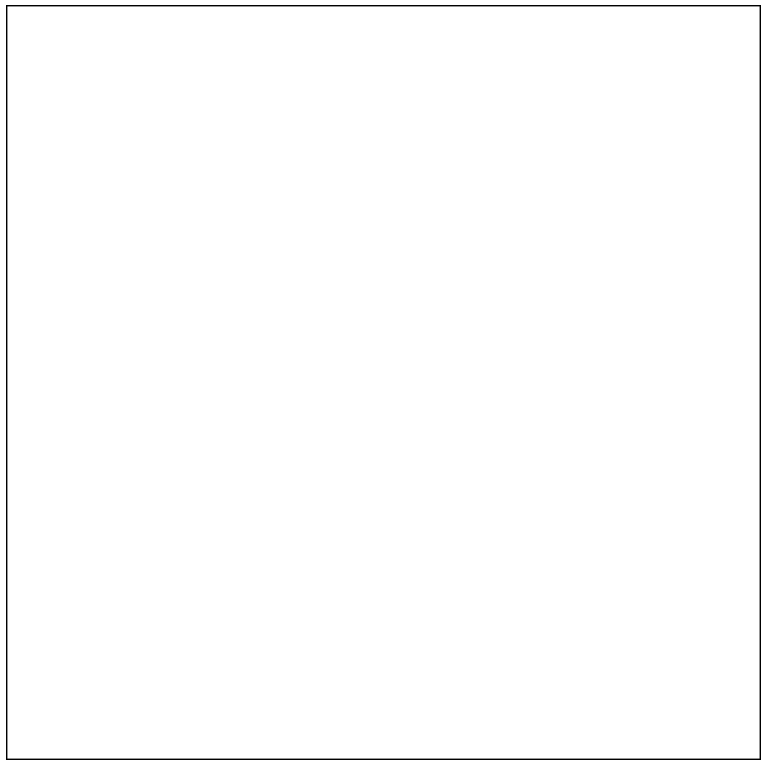

कुछ यात्रियों ने कुछ पेय पदार्थ लिए और कुछ ने हल्का फुल्का नाश्ता लिया और उसे खाने-पीने लगे। मेरे जैसे लोग, जिनके पास पैसे नहीं थे, वो ये सब बस देखते ही रहे।

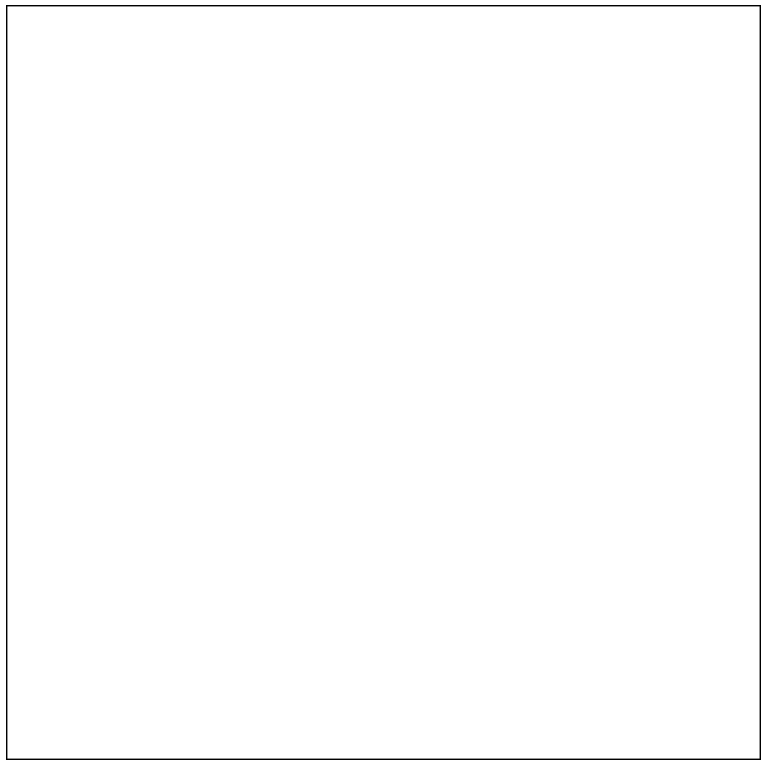

ये सभी गतिविधियाँ बस की आवाज़ से बाधित हुई, यह एक संकेत था कि हम जाने के लिए तैयार हैं। कंडक्टर फेरीवालों पर चिल्लाया कि वे बस से उतर जाएँ।

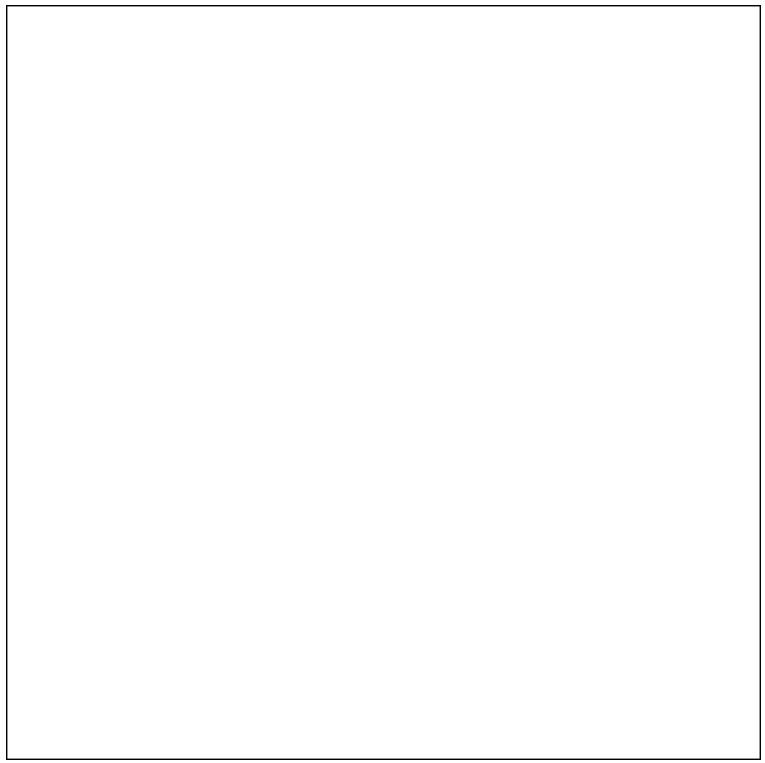

फेरीवाले बस से बाहर जाने के लिए एक दूसरे को धक्का दे रहे थे। उनमें से कुछ यात्रियों को खुले पैसे वापस लौटा रहे थे। और बाकी सभी, अंतिम समय में और सामान बेचने की कोशिश में लगे हुए थे।

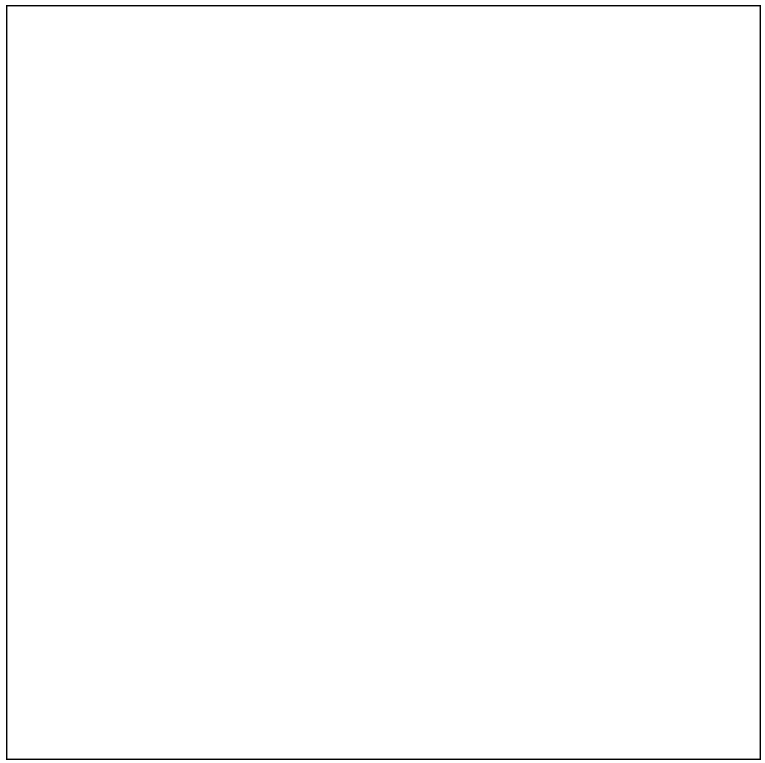

जब बस ने स्टैंड को छोड़ा, मैंने खिड़की से बाहर देखना शुरू किया। मैं सोचने लगा कि क्या कभी मैं अपने गाँव वापस जाऊँगा।

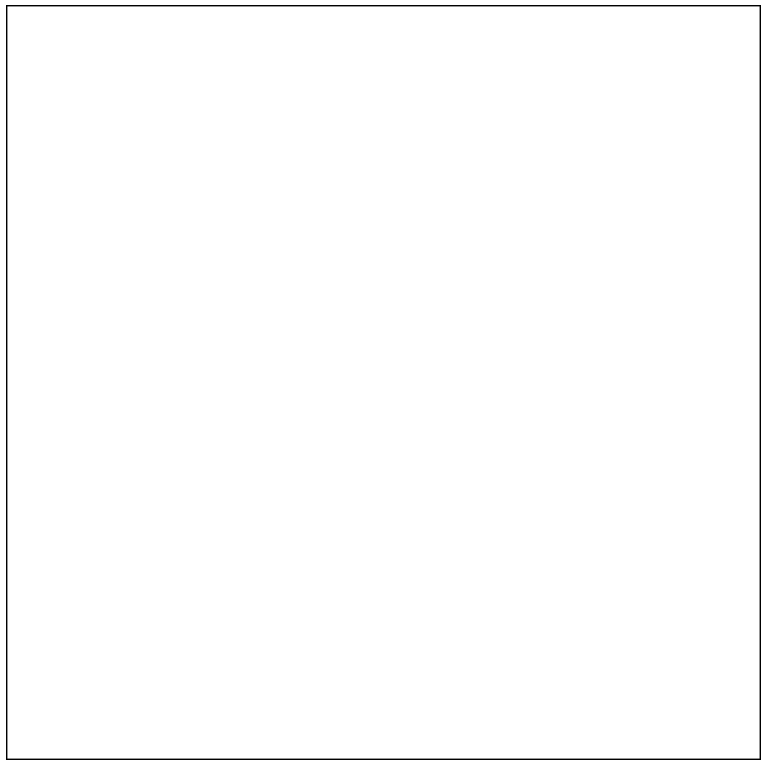

जब यात्रा आगे बढ़ी, बस अंदर से काफ़ी गर्म हो गई। मैंने सोने की आशा में अपनी आँखें बंद कर लीं।

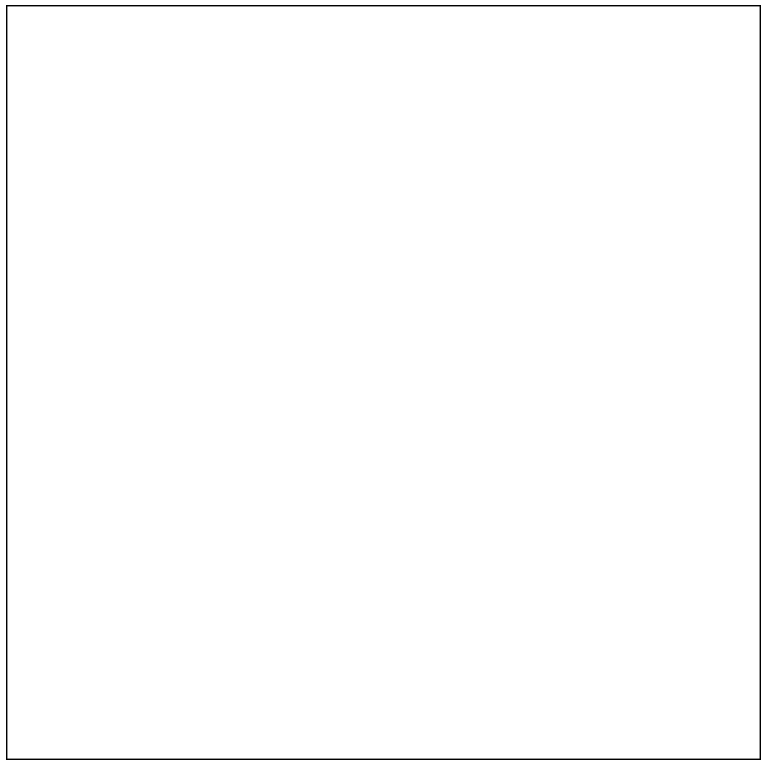

लेकिन मेरा ध्यान वापिस घर की ओर चला गया। क्या मेरी माँ ठीक होगी? क्या मेरे खरगोश को कुछ पैसे मिलेंगे? क्या मेरे भाई को उन पेड़ों में पानी डालना याद रहेगा जो मैंने लगाये हैं?

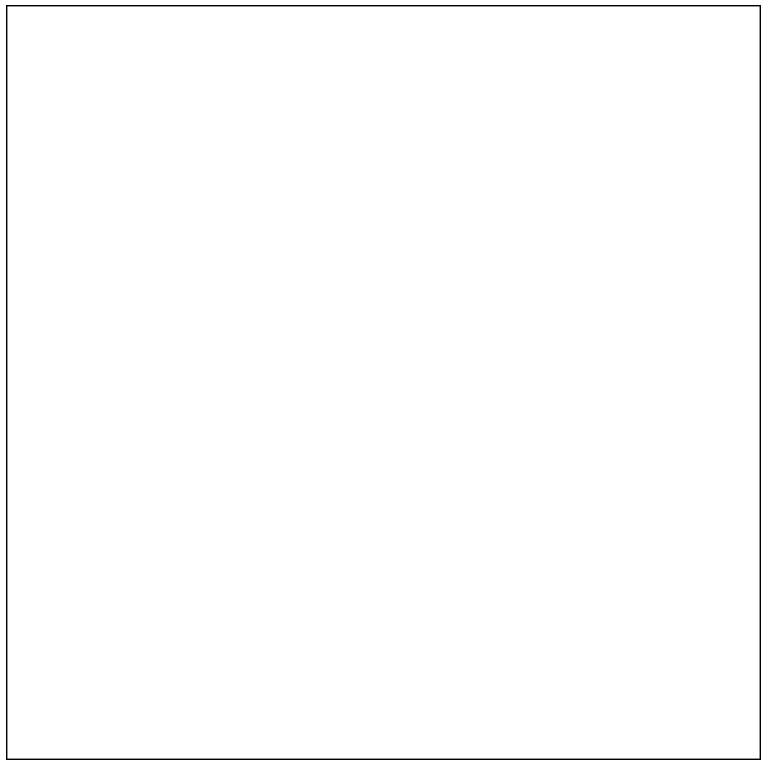

रास्ते में, मैं उस जगह का नाम याद कर रहा था जहाँ मेरे चाचा उस बड़े शहर में रहते हैं। मैं नींद में भी वो नाम बड़बड़ा रहा था।

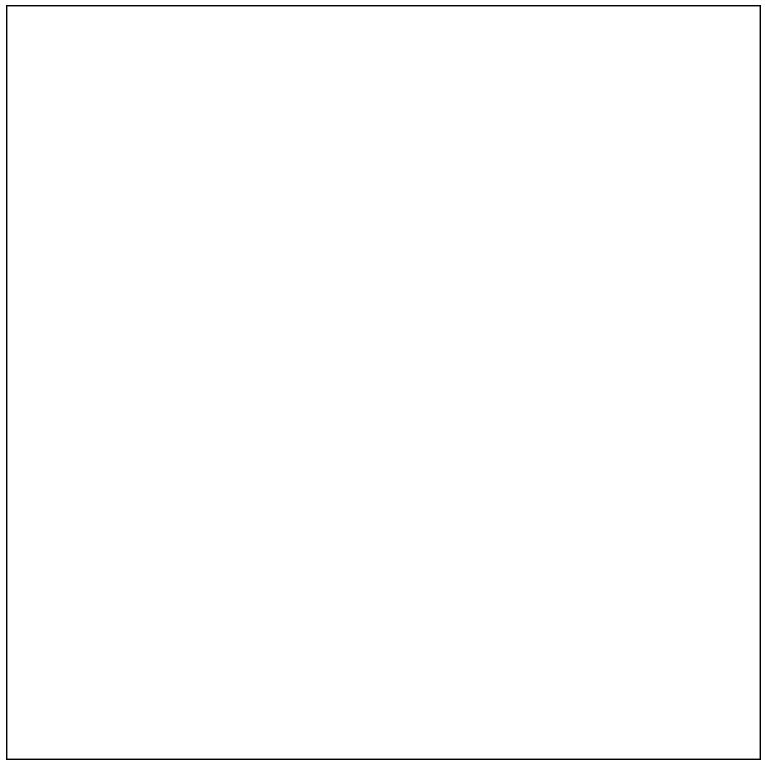

नौ घंटे बाद, मैं गाँव वापस जा रहे यात्रियों को बुलाए जाने और बस का दरवाज़ा ज़ोर से पीटने की आवाज़ से जगा। मैंने अपना छोटा सा थैला उठाया और बस से बाहर कूद गया।

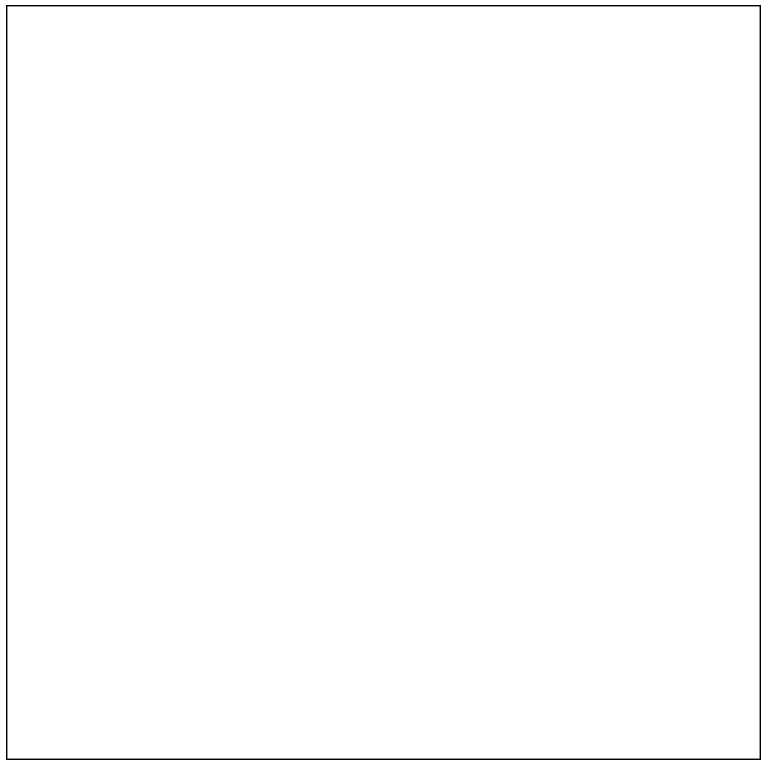

वापस जाने वाली बस जल्द ही भर गई। जल्द ही पूर्व की ओर चल दी। अभी मेरे लिए अपने चाचा का घर ढूँढ़ना सबसे ज़रूरी था।

Storybooks Mauritius

global-asp.github.io/storybooks-mauritius

वह दिन जब मैंने शहर के लिए घर छोड़ा

Written by: Lesley Koyi, Ursula Nafula
Illustrated by: Brian Wambi
Translated by: Nandani

This story originates from the African Storybook (africanstorybook.org) and is brought to you by Storybooks Mauritius in an effort to provide children's stories in Mauritius's many languages.

This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.